सार अर्शकेयर

सार अर्शकेयर 21 शक्तिशाली सामग्रियों से बनी एक विशेष रूप से तैयार की गई आयुर्वेदिक दवा है, जिसमें चित्रक मूल, वायविडंग, इंद्रायण मूल और दारू हरिद्रा जैसी दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ शामिल हैं, जो बवासीर के इलाज में अपने औषधि गुणों के लिए जानी जाती हैं।

अर्शकेयर के सक्रिय तत्व:

- दर्द और सूजन से राहत दिलाने में मदद करें।
- कब्ज को रोकने के लिए पाचनतंत्र को स्वस्थ करें।
- सूजन को कम करने और गुदा क्षेत्र में उचित रक्त परिसंचरण को बढ़ावा देने में सहायता।

अर्शकेयर एक प्राकृतिक और प्रभावी उपाय के रूप में बेहद लोकप्रिय है |

उत्पाद रेंज और उपयोग दिशा-निर्देश:

कैप्सूल और टैबलेट: आंतरिक राहत के लिए। सामान्य मात्रा १ कैप्सूल सुबह शाम अथवा चिकित्सक के अनुसार ले |

मरहम: बाहरी बवासीर के लिए सुखदायक अनुप्रयोग। प्रभावित क्षेत्र पर दिन में दो बार बाहरी रूप से लगाएं।

सिरप: आंतरिक उपचार और पाचन में मदद करता है। सामान्य मात्रा १ चम्मच सुबह शाम १/२ कप पानी में मिला कर अथवा चिकित्सक के अनुसार ले |

अधिक जानकारी या खरीदारी के लिए संपर्क करें :

वेबसाइट: www.ayurvedaindore.com

ईमेल: ayurvedaindorestore@gmail.com

व्हाट्सएप (केवल संदेश): 9827999988

निर्माता :

सार हर्बल इंदौर

एक आईएसओ और जीएमपी प्रमाणित कंपनी

सार अर्शकेयर

बवासीर के लिए एक संपूर्ण आयुर्वेदिक समाधान

"दर्द एवं तकलीफ न सहें। बवासीर से त्वरित और प्रभावी राहत के लिए आज ही अर्शकेयर आज़माएं!"

AYURVEDA INDORE

ऑनलाइन केवल आयुर्वेद इंदौर स्टोर पर उपलब्ध है

पाइल्स (बवासीर) क्या हैं?

अर्शरोग जिसे बवासीर या मस्से के रूप में भी जाना जाता है, मलाशय और गुदा के निचले हिस्से में स्थित सूजी हुई नसें हैं। वे तब होते हैं जब इस क्षेत्र की नसें सूज जाती हैं, जिससे असुविधा, दर्द और कभी-कभी रक्तस्राव हो सकता है। बवासीर आंतरिक (मलाशय के अंदर) या बाहरी (गुदा के आसपास की त्वचा के नीचे) हो सकता है।

बवासीर के सामान्य लक्षण:

दर्द और असुविधा: विशेष रूप से मलत्याग के दौरान या बैठते समय।

सूजनऔर गांठ: गुदा के आसपास गांठ या सूजन, जो छूने पर कोमल या कठोर हो सकती है।

खुजली या जलन: सूजन के कारण गुदा क्षेत्र में लगातार खुजली होती है।

रक्तस्राव: मल त्याग के दौरान थोड़ी या अधिक मात्रा में लाल रक्त दिखाई दे सकता है।

चिपचिपा स्राव: कुछ लोगों को मलद्वार में चिपचिपा स्राव या परिपूर्णता की भावना का अनुभव होता है।

बवासीर के प्रकार:

आंतरिक बवासीर: ये मलाशय के अंदर पाए जाते हैं और आमतौर पर बाहर से कोई लक्षण नहीं दिखाते हैं जबतक कि वे असुविधा या रक्तस्राव का कारण बनने के लिए पर्याप्त बड़े न हों।

बाहरी बवासीर: ये गुदा के आसपास की त्वचा के नीचे विकसित होते हैं और दर्दनाक, सूजन वाले या रक्तस्राव का कारण बन सकते हैं।

बवासीर के प्रमुख कारण:

पुराना कब्ज: मल त्याग के दौरान तनाव से मलाशय क्षेत्र में नसों पर दबाव पड़ता है, जिससे उनमेंसूजन हो सकती है।

स्थिर जीवनशैली: लंबे समय तक बैठे रहने से गुदाक्षेत्र में रक्त संचार ख़राब हो सकता है, जो बवासीर विकसित कर सकता है |

गर्भावस्था: गर्भावस्था के दौरान पेल्विक नसों पर बढ़ता दबाव महिलाओं में बवासीर का कारण बन सकता है।

मोटापा: अधिक वजन शरीर के निचले हिस्से की नसों पर अतिरिक्त दबाव डालता है, जिसमें मलाशय की नसें भी शामिल होती हैं।

आहार संबंधी कारक: कम फाइबर वाले आहार के कारणमल कठोर हो सकता है, जिससे मल त्याग के दौरान तनाव हो सकता है।

बवासीर के इलाज के लिए आयुर्वेदिक दृष्टिकोण:

आयुर्वेद में बवासीर को अर्श रोग कहा जाता है। आयुर्वेद वात, पित्त और कफ के दोषों का इलाज करने की अपनी अनूठी अवधारणा द्वारा बवासीर के इलाज में मदद कर सकता है। आयुर्वेद, पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली, बवासीर के प्रबंधन और उपचार के लिए विशेष तौर पर प्रभावी है । अर्शकेयर शरीर की प्राकृतिक प्रणालियों को संतुलित करने और हानिकारक दुष्प्रभावों को दूर करके, दीर्घकालिक राहत प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता हैं। इन उपचार का उद्देश्य सूजन को कम करना, पाचन में सुधार करना और भविष्य में होने वाली समस्याओं को रोकने के लिए रक्त वाहिकाओं को मजबूत करना है।

बवासीर में आहार प्रबंधन

मरीजों को सुपाच्य यानी आसानी से पचने वाला आहार लेने की सलाह दी जाती है जो फाइबर से भरपूर हो लेकिन कार्ब्स और मसाले बहुत कम हो। मसालों से जलन बढ़ जाती है।